Literacy for a Billion

Movie: Baharo Ke Sapne
Year: 1967

Song: Chunari Sambhal Gori
Lyricist: Majrooh Sultanpuri

चुनरी सँभाल गोरी
उड़ी चली जाए रे
ए चुनरी सँभाल गोरी
उड़ी चली जाए रे
मार ना दे डंक कहीं
नज़र कोई हाय

चुनरी सँभाल गोरी
उड़ी चली जाए रे
मार ना दे डंक कहीं
नज़र कोई हाय
देख देख पग ना
फिसल जाए रे

अरे रे ...
हा आ
चुनरी सँभाल
हा आ
उड़ी चली जाए
हा आ
मार ना दे डंक
हा आ
नज़र कोई हाय

ल लै ला ...
आ ...
रु रु रु ...

रु रु ...

फिसले नहीं चलके
कभी दुख की डगर पे
ठोकर लगे हँस दें
हम बसने वाले
दिल के नगर के

हाय हाय

फिसले नहीं चलके
कभी दुख की डगर पे
ठोकर लगे हँस दें
हम बसने वाले
दिल के नगर के
अरे हर क़दम
बहक के सँभल जाए रे

अरे रे ...
हो ओ
चुनरी सँभाल
हो ओ
उड़ी चली जाए
हो ओ
मार ना दे डंक
हो ओ
नज़र कोई हाय

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.